Dr. Sunil Kr. 'Suman'
Assistant Professor (Guest)
Dept. Of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
Date:- 09-12-2020
B.A. Part-I (Gen./Subs.)
Lectur- No.-17

Remembering and Forgetting:-

Next class

Long Term memory

टुलविंग (Tulving, 1972) के अनुसार LTM को दो भागों में विभक्त किया गया

(1) प्रासंगिक स्मृति (Episodic Memory):-

प्रासंगिक स्मृति में ऐसी व्यक्तिगत सूचनाएं संचित होती है जो अस्थायी रूप से व्यक्ति के साथ घटित होती है। इन सूचनाओं से यह ज्ञात होता है कि अमुक घटना कब हुई। इस तरह प्रासंगिक स्मृति एक ऐसी नोटबुक का काम करती है जिसमें विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत घटनाएं संचित होती है। इस स्मृति को आत्मचरित स्मृति (Autobiographical memory) भी कहा जाता है। प्रासंगिक स्मृति के कुछ उदाहरण इस प्रकार है:- जैसे कल मुझे 10 बजे कॉलेज जाना है, मेरा बचपना कलकत्ता में व्यतीत हुआ, मेरा स्कूल समय बहुत अच्छा था आदि।

(2) अर्थगत स्मृति (Semantic memory):-

इस स्मृति में व्यक्तिगत शब्दों, संकेतों आदि के बारे में एक क्रमबद्ध ज्ञान रखता है। इस तरह के ज्ञान में शब्दों, संकेतों के आपसी सम्बन्धों, तथा उनके अर्थों तथा उनमें जोड़-तोड़ करने तथा आदि का ज्ञान सम्मिलित होता है। हम वस्तुतः अर्थगत स्मृति को मानसिक शब्दकोष (Mental

2

dictionary) या विश्वकोष (Encyclopedia) कह सकते हैं। अर्थात स्मृति के कुछ उदाहरण हैं जैसे जल का सूत्र H_2O होता है। वर्ष में 365 दिन होता है, दो और दो का योग चार होता है इत्यादि।

प्रासंगिक स्मृति तथा अर्थवात स्मृति को सामुहिक रूप से घोषणात्मक स्मृति (declarative memory) या स्पष्ट स्मृति (explicit memory) भी कहा जाता है, क्योंकी इस स्मृति में तथ्यों के रूप में प्रकट कर उनकी घोषणा की जासकती है। LTM का अन्य प्रकार, अघोषणात्मक स्मृति (NON declarative memory) भी है जिसमें आदत, पेशीय कौशल तथा अनुबन्धन द्वारा सीखी गई अनुक्रियाएं हैं जिनकी तथ्यों के रूप में घोषणा नहीं की जा सकती है

End

Scanned with CamScanner